६२: विश्व परिवार राज्य सभा

दिनांक -२४-०२-२०१२

मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में एकरूपता के लिये व्यवस्था की आवश्यकता विकसित चेतना विधि से महसूस होता है | यह व्यक्तिवादी, समुदायवादी विचार से आता नहीं | मानव इसको सोच ही नहीं सकता क्योंकि व्यक्तिवाद, समुदायवाद जीव चेतना का प्रकाशन है | इसके आधार पर मानव में मानव चेतना को पहचानने का आधार नहीं है | यह विकल्प विधि से सम्भव हुआ है | विकल्प विधि अपने में साधना, ध्यान, अभ्यास, समाधि, संयम से निकला है अथवा प्रकाशित हुआ है | विकसित चेतना अपने में मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में ज्ञान एवं प्रमाण है | इनमें प्रभेद इतना ही है कि मानव चेतना न्याय प्रधान विधि से, देव चेतना धर्म प्रधान विधि से, दिव्य चेतना सत्य प्रधान विधि से न्याय, धर्म, सत्य को प्रमाणित करते हैं | न्याय धर्म सत्य ही विकसित चेतना का मूल वस्तु है | इनमें क्रमिक अधिकार भेद से ही चेतना क्रम है | यही ज्ञान एवं आचरण तथा परम्परा में प्रमाणित होता है |

प्रमाणित करने का कार्य केवल मानव ही करता है, कोई जीव जानवर नहीं करता, इस बात को अच्छी प्रकार से शोध किया है | प्रमाणित करने के क्रम में मानव स्वयंस्फूर्त विधि से मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का प्रकाशन, अभिव्यक्ति व्यवस्था में स्पष्ट करना बनता है | यही कर्तव्य का आधार बनता है | मानवीयता सहज अभिव्यक्तियाँ स्वयं में मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था है | इसे सर्वकालीन सर्वदेशीय सत्य रूप में पहचाना गया है | मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था सहज मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना सहज स्वीकृत होना, प्रमाणित होना सहज है | इसलिए चेतना को विकसित चेतना नाम दिया है | यही व्यवहारिक चेतना है | यह जीवन ज्ञान विधि से समझ में आता है | मानव चेतना जीवन ज्ञान विधि से आता है | जीव चेतना अनुमानित चेतना अथवा अनुसरण किया हुआ चेतना है | यह शरीर को जीवन माने से आता है | जीव चेतना विधि से मानव जात दुर्घटना में फंस गया है जबकि मानव जात शुभ चाहने वाला है |

राज्य एवं धर्म अर्थात धर्मनीति एवं राज्यनीति वर्तमान तक जैसा भी प्रचलित हुआ, जिससे अनुप्राणित मानव जात जो कुछ भी किया, उन सबका फल परिणाम स्वरूप धरती बीमार हो गयी, ऋतुकाल विपरीत हो गयी तथा मानव जात सभी अपराधों को वैध मान लिया है | जैसा अपना शोषण कोई नहीं चाहता, व्यापार शोषण के बिना होता नहीं | नौकरी भी व्यापार के अंगभूत है, साथ में संघर्ष एवं युद्ध सभी सभी अपराधों को वैध माना है | इस विधि से मानव प्रकारांतर से अपराध कृत्यों में फंस चुका है | मानव जात का उद्धार ही भ्रम-मुक्ति, अपराध-मुक्ति है | साथ में विकसित चेतना विधि से जीने का प्रमाण है | इस गतिविधि से हमको विधि निषेध का फल परिणाम समझ में आता है |

जागृत चेतना विधि से हर मानव समझदार होने का व्यवस्था है | हर परिवार समाधान, समृधि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीने की व्यवस्था है | इसी क्रम में १० सोपानीय व्यवस्था वर्णित है | इसी क्रम में अंतिम व्यवस्था रुपी विश्व परिवार सभा का वर्णन करने का प्रयास है | जितने भी वांगमय हैं ये सब सूचना तक ही पहुँचते हैं; प्रमाण मानव ही है | मानव को प्रमाणित होना आदिकालीन अपेक्षा है | इस अपेक्षा में शुभ समाया है क्योंकि हर व्यक्ति अपने में से ही परम्परा में अच्छा बनने की कोशिश किया करता है | परम्परा का स्थिरता न होने की वजह से स्थिरता की कल्पना है | इस संदर्भ में पहले बताया जा चुका है कि जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम होना स्पष्ट किया जा

चुका है | इस प्रकार श्रेष्ठ चेतना स्वरूप तीन होता है | इसी का नामकरण मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना दिया गया है | मानव चेतना से मानव संस्कृति, सभ्यता, देव चेतना से विधि एवं दिव्य चेतना विधि से व्यवस्था पूर्वक जीने की व्यवस्था है अथवा ऐसा जी पाता है | यह श्रेष्ठतर एवं श्रेष्ठतम आचरण में भी अविभाज्य रहता है | इसी क्रम में मानव अपने सम्पूर्ण वैभव को अनुभव करना बनता है | वैभव सकारात्मक होता है न कि नकारात्मक | अभी तक जीव चेतना विधि से जिया हुआ मानव व्यक्तिवादी, समुदायवादी चेतना प्रचलित होते हुए संघर्ष एवं युद्ध को छोडकर अपने को शक्तिमान माना नहीं है जबकि क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति का संयुक्त प्रयोजन ही सुख, शांति का प्रयोजन है |

कर्माभ्यास पूर्वक क्रिया शक्ति, व्यवहाराभ्यास एवं शास्त्राभ्यास पूर्वक इच्छा शक्ति, तथा चिन्तनाभ्यास अर्थात योग विधि से ज्ञान शक्ति का प्रकटन है | मानवीयतापूर्ण जीवन में क्रिया शक्ति एवं इच्छा शक्ति, देव चेतना में इच्छा शक्ति और ज्ञान शक्ति, दिव्य चेतना में ज्ञान शक्ति का सम्पूर्ण प्रकटन है | यही विकसित चेतना की श्रृंखला है | इसे पाने के लिये समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व आवश्यक है | यह शिक्षा विधि से अध्ययनपूर्वक सम्पन्न होता है | इसमें अध्यापन भावी रहता है | इसी सम्पूर्ण व्यवस्था के लिये १० सोपानीय व्यवस्था है | मूल में परिवार सभा में ही मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का सूत्र समाया रहता है | यही समझदारी का मतलब है | समझदारी से ही समाधान होना पाया गया है | श्रम से समृद्धि होता है | ऐसा समाधान, समृद्धिपूर्वक जीता हुआ परिवारों का सर्वदेश काल में अधिकता होना ही अभयतापूर्वक जीने का स्वरूप है | ऐसा जी पाना ही १० सोपानीय व्यवस्था के रूप मे प्रकाशन है | यही सह-अस्तित्व में जीने का स्वरूप है | यह अधिकार विश्व स्वराज्य परिवार सभा में समाहित रहता है |

विश्व परिवार स्वराज्य सभा का निर्वाचन प्रधान स्वराज्य परिवार सभाएँ सम्पन्न करते हैं | जितना भी प्रधान स्वराज्य सभाएं धरती पर बना रहता है उन प्रत्येक सभा में से एक-एक सदस्य निर्वाचित होकर विश्व परिवार सभा को गठित किया करते हैं | अन्य सभी नौ सभाओं में जैसा निर्वाचित सदस्यों का अधिकार रहता है उसी प्रकार से विश्व परिवार सभा का सदस्यों का अधिकार भी समान रूप से वर्तमान रहता है | एक का कम, एक का ज्यादा होता नहीं | प्रत्येक सदस्य का समानाधिकार रहता है | इन्हीं अधिकारों के साथ पांच आयामी व्यवस्था सम्पन्न होती है | इन पांच आयामों के साथ छठवां आयाम विकास क्रम में व्यक्तिवादी, समुदायवादी, राज्य और धर्म को मानव १० सोपानीय व्यवस्था में विलय करना भी एक कर्तव्य है | विलय करने के क्रम में एक सुरक्षा समिति छठवां समिति बना रहता है |

इस प्रकार से विश्व परिवार सभा का छः आयाम होगा | इनका सदस्य मनोनीत विधि से होगा | इसका आधार जनसंख्या विधि से होगा | इस क्रम में सभी देशों का प्रतिनिधित्व सुरक्षा समिति में रहेगा | सुरक्षा समिति में तन, मन, धन रुपी अर्थ का सुरक्षा का बात है | साथ में धरती, हवा, जल, वन, खनिज सम्पदाओं का सुरक्षा और वन्य प्राणी मानव संस्कृति, सभ्यता का सुरक्षात्मक नीतियां इस समिति में प्रधान कार्यक्रम के रूप में रहेगा | ग्राम स्वराज्य व्यवस्था के अंतर्गत जो पांच समितियां रहती हैं, उसमें मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का जिम्मेदारियां रहती हैं |

इसी प्रकार विश्व स्वराज्य सभा में समितियां बनी रहती हैं | उसमें अलग से एक समिति बना रहता है | यही छठवां समिति है | इस छठवीं समिति का पहचान केवल विश्व राज्य सभा में ही प्रकाशित हो पाता है | इसका आशय बाकी नौ सभाओं में न्याय-सुरक्षा समिति में समायी रहती है | इस विधि से सम्पूर्ण व्यवस्था के साथ हमारा जीना बनता है | सम्पूर्ण व्यवस्था का मतलब समाधान, समृद्धिपूर्वक हर व्यक्ति प्रमाणित करेगा और हर परिवार समाधान, समृद्धि प्रमाणित करने का व्यवस्था रहेगा | इस प्रकार मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था का धारक वाहक होता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज